एमटीसी में नहीं, सिर्फ कागजों में भर्ती हैं बच्चे

भास्कर ग्राउंड रिपोर्ट | प्रदेशभर में कुल 147 एमटीसी, सालभर में 9891 अतिकुपोषित बच्चे भर्ती

जयपुर। प्रदेश के स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक प्रदेशभर में कुल 147 एमटीसी चल रहे हैं। जिनमें सालभर में 9891 अतिकुपोषित बच्चे भर्ती हुए। इनमें से 40 अस्पतालों में 10 बैड वाले एमटीसी हैं जिनमें से 33 तो जिला अस्पताल ही हैं। वहीं, 107 सीएचसी पर 6 बैड वाले एमटीसी हैं। खास बात यह है कि असल में इन 107 में से महज 48 ही चालू हालत में हैं। बाकी पर सुविधाएं न होने या डॉक्टर न होने के चलते ताला लगा है। मसलन, उदयपुर के सलूंबर सीएचसी पर डॉक्टर तो है लेकिन अलग से वार्ड नहीं है। जबकि सरकारी कागजों में यह 2011 से चालू है। डूंगरपुर जिले के आसपुर सीएचसी पर ताला लटका है। जून 2012 के बाद से डॉक्टर नहीं है। प्रतापगढ़ के धरियावद सीएचसी का एमटीसी कागजों में तो है लेकिन बंद पड़ा है। उदयपुर के गोगुन्दा सीएचसी में एमटीसी को स्टोर बना रखा है। वहीं, इसके किचन में कबाड़ भरा हुआ मिला। वहीं, झाड़ोल सीएचसी में बिल्डिंग तो है लेकिन एमटीसी का अता-पता भी नहीं है। कुपोषण के लिहाज से सबसे ज्यादा संवेदनशील समझे जाने वाले बारां जिले के शाहबाद एमटीसी बच्चों से भरा रहता है लेकिन यहां पीडियाट्रिशियन ही नहीं हैं। वहीं, स्टाफ भी आधा ही है। इलाज कराकर गए बच्चों का फॉलोअप भी नहीं होता। केलवाड़ा में भी यही हालात हैं। किशनगंज सीएचसी के आसपास गंदगी मिली। कोई व्यवस्था न होने के चलते आवारा कुत्ते और सूअर तक अस्पताल में घुस जाते हैं।

श्रीगंगानगर के घड़साना सीएचसी में 6 बैड का एमटीसी होने के बावजूद महीने में एक ही बच्चे का इलाज हो रहा है। जो बच्चे आते हैं उन्हें भी 24 घंटे लगातार भर्ती नहीं रखा जाता जो नियम के खिलाफ है। वहीं, आंगनबाडिय़ों के हालात भी खराब हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग के आईसीडीएस कार्यक्रम के तहत दावा किया गया है कि विभाग ने 2013-14 में कुल 30.57 लाख से ज्यादा बच्चों को पूरक पोषाहार मुहैया कराया है। वहीं, अप्रैल से दिसंबर 2014 तक 28.11 लाख बच्चों को इसका लाभ मिला। लेकिन भास्कर की पड़ताल में सामने आया है कि आंगनबाडिय़ों में बच्चे आते ही नहीं। उदयपुर के देवगांव की आंगनबाड़ी में कार्यकर्ता तो मौजूद थी लेकिन बच्चा एक भी नहीं था। जबकि रजिस्टर में कुल 40 बच्चों के नाम दर्ज हैं। यही हाल खोलड़ी और झल्लारा के आंगनबाड़ी केंद्रों का भी है।

ये तस्वीरें उदयपुर के गोगुन्दा, प्रतापगढ़ के धरियावद और डूंगरपुर के आसपुर में चलने वाले एमटीसी की हैं। कहीं ताला लगा हैं तो कहीं बच्चों के किचन में कबाड़ भरा है।

पूरक पोषाहार तो दूर यहां न तो कार्यकर्ता पहुंचती और न ही आशा-सहयोगिनी

केंद्र और राज्य सरकारों की ओर से सालाना हजारों करोड़ खर्च

केंद्र और राज्य सरकारों की ओर से सालाना हजारों करोड़ खर्च करने के बावजूद लाखों बच्चे कुपोषण से जूझ रहे हैं। नेशनल फैमिली हैल्थ सर्वे (एनएफएचएस) व यूनीसेफ के आंकड़े के मुताबिक प्रदेश में 0 से 6 साल के तकरीबन 10 लाख बच्चे हर साल कुपोषित रहते हैं। वहीं, चौंकाने वाला तथ्य यह है कि ग्रामीण और शहरी इलाकों में बच्चों की सेहत की निगरानी के लिए समेकित बाल विकास योजना व स्वास्थ्य विभाग के तहत 1.5 लाख से ज्यादा कर्मचारी कार्यरत हैं। इनमें से स्वास्थ्य की निगरानी करने वाली सबसे निचली कड़ी। आशा सहयोगिनी की तादाद ही 47 हजार है।

आंगनबाड़ी से जुड़े हैं गांव, लेकिन कार्यकर्ता पहुंचते ही नहीं

भास्कर ने प्रदेश की ऐसी जगहों का भी दौरा किया जहां आज तक किसी ने एंबुलेंस नहीं देखी। फिलहाल कुपोषण के लिहाज से सबसे ज्यादा फोकस किए गए जिले बारां के दूर-दराज के इलाकों के हालात सुधरे नहीं हैं। शाहबाद ब्लॉक के संदोकड़ा ग्राम पंचायत इलाके के तिपरका, मानपुर जैसे गांवों को यहां से तीन किलोमीटर दूर मुसरेड़ी आंगनबाड़ी केंद्र से जोड़ा गया है।

जयपुर से सटे फागी उपखंड के हालात ज्यादा अच्छे नहीं

जयपुर से सटे फागी उपखंड के हालात ज्यादा अच्छे नहीं हैं। यहां के केरिया और मेंदवास आंगनबाड़ी केंद्रों में 0 से 6 साल तक के बच्चों का कभी वजन ही नहीं तौला गया। केरिया में सुर्याश (5) की मां गीता बांमू के मुताबिक आज तक उनके यहां आकर न तो किसी ने वजन किया और न ही पोषाहार ही दिया। यही बात मेंदवास के हनुमान कांटवा ने बताई। ऐसी लापरवाहियां तब हो रही हैं जबकि प्रदेश में 3 साल की उम्र तक के एक तिहाई बच्चे कम वजन वाले यानी कुपोषित हैं। वहीं, तकरीबन 80 फीसदी एनीमिक यानी खून की कमी से ग्रस्त हैं। कुपोषण शिशु मृत्यु दर और पांच साल से छोटे बच्चों (अंडर-5) की मृत्यु दर का एक बड़ा कारण हैं।

कुपोषित कौन ?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मुताबिक सही व पर्याप्त भोजन की कमी के चलते शरीर में पोषण की कमी को कुपोषण कहा जाता है। यह लगातार होने वाले इन्फेक्शन से भी होता है। एक आंकड़े के मुताबिक बच्चों की कुल मौतों में से 54 फीसदी मौतों का कारण कुपोषण है। ज्यादातर मामलों में कुपोषण मां के पोषण से जुड़ा है। यदि मां कुपोषित है तो बच्चा भी कुपोषित होगा जिसे बीमारी और मौत का खतरा सामान्य बच्चे के मुकाबले कई गुना है।

पिछली सरकार में घोषित किसी विवि में पहली बार रखेंगे नींव

राज्यपाल 29 को रखेंगे जोबनेर यूनिवर्सिटी के प्रशासनिक भवन की नींव, ये हे 66 साल पुराना कॉलेज व दो वर्ष पुरानी यूनिवर्सिटी

पिछली सरकार में जयपुर, जोधपुर और कोटा में घोषित हुए थे कृषि विश्वविद्यालय

एजुकेशन रिपोर्टर | जयपुर

श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालयय, जोबनेर (जोबनेर यूनिवर्सिटी) के प्रशासनिक भवन की नींव 29 अक्टूबर को रखी जाएगी। ये कॉलेज 5 जुलाई 1947 में बना था और सितंबर 2013 में गहलोत सरकार में इसका यूनिवर्सिटी का नोटिफिकेशन जारी हुआ था। पिछली सरकार में जोबनेर एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी सहित कोटा व जोधपुर में तीन कृषि विश्वविद्यालय घोषित हुए है। इस सरकार में ये पहला मौका होगा जब पिछली कांग्रेस सरकार द्वारा घोषित एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी की नींव रखी जाएगी। हालांकि ये तीनों कृषि विश्वविद्याल सामान्य विश्वविद्यालयों की श्रेणी में है लेकिन इनके प्रशासनिक भवन नहीं होने से इनके कार्यकलाप सामान्य उच्च शिक्षण संस्थाओं या विश्वविद्यालय की तरह नहीं होने की वजह से राज्यपाल व राज्य सरकार दोनों ही इन मुद्दों पर गंभीर हुए है।

3 साल के लिए 44 करोड़ का प्लान

संभागीय आयुक्त व कार्यवाहक कुलपति हनुमान सिंह भाटी के अनुसार जोबनेर एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी में तीन साल के लिए 44 करोड़ रुपए का प्लान है। प्रशासनिक भवन पर 12 करोड़ आठ लाख रुपए खर्च होने है। शेष राशि यूनिवर्सिटी के डवलपमेंट, रिसर्च, कक्षाओं और हॉस्टल पर खर्च होनी है। प्रशासनिक भवन में पहले फेज पर साढ़े चार करोड़ रुपए खर्च होंगे।

इन आठ जिलों में है इस यूनिवर्सिटी की सीमा

राज्य सरकार के नोटिफिकेशन की सीमा जयपुर,अलवर, सीकर, दौसा, टोंक, अजमेर, भरतपुर और धौलपुर में है।

लीकेज से बरबाद होते पानी बचाने का लोगों ने ढूंढा जुगाड़

जयपुर। जगतपुरा में आरटीओ दफ्तर पास पुलिया के नीचे से गुजर रही बीसलपुर लाइन में लीकेज को जलदाय विभाग तो ठीक नहीं कर रहा, लेकिन उससे बहते पानी को बरबाद होने के बजाय यहां के लोगों ने जुगाड़ कर सदुपयोग कर लिया। जहां पाइप से पानी लीकेज हो रहा है, वहां एक बर्तन रखा गया। इस बर्तन से बूस्टर की सहायता से पानी खींचा जा रहा है और उसका इस्तेमाल किया जा रहा है।

अलग-अलग क्षेत्रों में योगदान के लिए 24 लोगों का शाही सम्मान

जयपुर। सिटी पैलेस में शुक्रवार को पूर्व महाराजा स्व. सवाई भवानी सिंह के जन्मदिन के अवसर पर वार्षिक पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मानवता की सेवा, हेरिटेज संरक्षण, चिकित्सा विज्ञान, पत्रकारिता और खेल जैसे 23 क्षेत्रों के 24 लोगों को अवॉर्ड देकर सम्मानित किया गया। पुरस्कारों में 31 हजार रुपए, शॉल, सिटी पैलेस के सर्वतोभद्र चौक में रखे रजत कलश की प्रतिकृति, प्रशस्ति-पत्र और श्रीफल प्रदान किए गए। सामाजिक सेवाओं के लिए राजा दूल्हा राय अवॉर्ड प्रो.टी.के. उन्नीथन को, आर्किटेक्चर एवं हेरिटेज संरक्षण के लिए राजा काकिल देव अवॉर्ड रश्मि शर्मा को, औषधि के क्षेत्र में राजा पज्जवान देव अवॉर्ड डॉ. मनीष भाटिया को, बहादुरी के लिए राजा मानसिंह प्रथम अवॉर्ड राहुल खन्ना को, पारिस्थितिकी संतुलन के लिए मिर्जा राजा रामसिंह अवॉर्ड हेमराज मीणा को, प्रशासनिक सेवा एवं नागरिक सुरक्षा के लिए महाराजा सवाई माधो सिंह अवॉर्ड शैलेन्द्र अग्रवाल को, टीवी, फिल्म एवं थिएटर के लिए महाराजा सवाई माधो सिंह द्वितीय अवॉर्ड जूही परमार को दिया गया। खेल क्षेत्र के लिए महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय अवॉर्ड रजत चौहान को, परफॉर्मिंग आर्ट के क्षेत्र में महारानी किशोर कंवर अवॉर्ड पंडित प्रवीण आर्य को, किसी भी क्षेत्र में अचीवर के लिए राजकुमारी दीया कुमारी अवॉर्ड पद्मिनी राठौर आदि को दिए गए।

स्कूल संचालक का एटीएम बदलकर बदमाश ने ₹38 हजार निकाले

जयपुर। जवाहर सर्किल इलाके में स्थित एसबीआई बैंक के एटीएम में पैसे निकालने आए स्कूल संचालक का कार्ड बदलकर उसके खाते से 38 हजार रुपए निकाल लिए। इस संबंध में पीड़ित जगतपुरा निवासी 47 वर्षीय हेमंत सिंह ने जवाहर सर्किल थाने में रिपोर्ट दी है। पुलिस ने पीड़ित की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी की तलाश कर रही है। आरोपी युवक ने पीड़ित को जो एटीएम कार्ड दिया था। वह दिल्ली निवासी श्रीधर पांडे के नाम से जारी हो रखा है। पुलिस ने बताया कि पीड़ित हेमंत सिंह गुरुवार को जवाहर सर्किल स्थित एसबीआई के एटीएम में पैसे निकालने गया था। वहां पर पहले से एक युवक खड़ा था।